शिक्षा के विभिन्न आयाम : टैगोर एवं गाँधी

MR SAROJ KUMAR
ASSISTANT PROFESSOR
EDUCATION DEPARTMENT(B.ED)
R.M COLLEGE,SAHARSA
CONTACT NO-9334195883

रविन्द्र नाथ टैगोर और महात्मा गाँधी अपने समय की दो महान आत्माएँ थीं। एक ही समय ही समय में इस प्रकार के व्यक्तित्व अपनी–अपनी तरह से अलग क्षेत्रों में काम करते हुए एक दूसरे से जुड़े होंगे यह कल्पनातीत विश्वास उनके पत्रों, समसामयिक लेखों एवं संदर्भित ग्रंथों के माध्यम से दृढ़ होता है।

गुरुदेव एवं महात्मा दोनों ने ही शिक्षा के संबंध में बहुत ही व्यापक एवं व्यावहारिक पहलुओं पर बहुत ही सूक्ष्मता से अपने विचार का रखा है, जो भारतीय मनीषियों के लिए वर्तमान समय मार्गदर्शन का श्रोत है। इनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र दिये गये विचार विभिन्न ग्रंथों एवं लेखों के माध्यम से हो पाती है। शिक्षा के संदर्भ में इनकी व्यापक सोच थी तथा शिक्षा के प्रत्येक पहलुओं पर इन्होंने प्रकाश डालने का कार्य किया।

गुरुदेव का जीवन दर्शन प्राचीन ऋषियों की तरह व्यापक था उनका व्यापक जीवन दर्शन उपनिषद के गहन चिन्तन मनन के परिणाम स्वरूप विकसित हुआ था। उपनिषदों में विवेचित विश्वबोध की भावना ने गुरुदेव के व्यक्तित्व सोच और कार्य को अत्यधिक प्रभावित किया। वे सम्पूर्ण जीव जगत में इस सत्ता को महसूस करते हैं। वहीं दूसरी ओर गाँधीजी के विचारों और कार्यों पर उपनिषद् का ही प्रभाव था, साथ ही रस्किन टॉलस्टॉय, थोरो जैसे विद्वानों के सामाजिक आर्थिक दृष्टिकोण का

भी प्रभाव पड़ा। इन सबका समन्वित रूप गाँधीजी का सर्वोदय दर्शन हैं जिसमें केन्द्र बिन्दु व्यक्ति से बढ़कर समष्टि तक हो गया है। गाँधीजी भारतीय दार्शनिक परंपरा के दो श्रेष्ठ तत्वों सत्य और अहिंसा को गाँधीजी ने अपने सम्पूर्ण विचारों और कार्यों के केन्द्र में रखा। दोनों भारतीय मनीषियों ने अपने सोच का केन्द्र बिन्दु मनुष्य को ही बनाया है।

शिक्षा संबंधी गुरुदेव के मूल विचार उनके प्रसिद्ध लेख तपोवन (1909) मे ंदेखे जा सकते हैं। टैगोर का मानना है कि प्रकृति मानव व अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में परस्पर मूल और प्रेम है। उनका कथन है कि सच्ची शिक्षा के द्वारा संसार की सभी वस्तुओं में प्रेम तथा मेल की भावना विकसित होनी चाहिए। दूसरी ओर गाँधीजी 'हरिजन' समाचार–पत्र में इनके शैक्षिक विचार देखे जा सकते हैं। गाँधीजी का मानना था कि ''साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न प्रारंभ। यह मात्र एक साधन है, जिसके द्वारा स्त्री एवं पुरुष को शिक्षित किया जा सकता है। गाँधीजी सच्ची शिक्षा उसे मानते थे, जो बालक की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक शक्तियों को विकसित करती है।

शिक्षा के उद्देश्य के संबंध में भी दोनों के विचार लगभग समान थे। उनका मानना था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। थोपी हुई शिक्षा के विपरीत बच्चों की इच्छा के अनुरूप शिक्षा देने के पक्षधर थे। भारत की तत्कालीन परिस्थितियों को देखकर दोनों ने ही जीविकोपार्जन के उद्देश्य को सर्वोपरी माना। इसके अलावा शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में सांस्कृतिक उद्देश्य, पूर्ण विकास का उद्देश्य, नैतिक अथवा चारित्रिक विकास का उद्देश्य एवं आध्यात्मिक उद्देश्य को रखा है।

पाठ्यक्रम के संबंध में इनके विचार काफी व्यापक थे। दोनों ने तत्कालीन शिक्षण उद्देश्यों को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम में साहित्य, विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि विषयों को शामिल करने का विचार दिया इसके अलावा छात्र स्वशासन, खेलकूद व समाज सेवा आदि को भी पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए। सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, बर्तन बनाना, कागज बनाना, खेती, हस्तकला, चमड़े के कार्य आदि को पाठ्यक्रम में शामिल करने का सुझाव दिया है। दोनों का पाठ्यक्रम क्रिया प्रधान है।

शिक्षण विधि के रूप में क्रिया प्रधान शिक्षण विधियों को ही टैगोर एवं गाँधीजी ने मुख्य स्थान दिया है। वे चाहते थे कि बालक जो भी सीखे वह स्थायी हो अतः वे बालकों को करके सीखने पर ज्यादा बल देते थे। इसके अलावा वास्तविक क्रियाओं के द्वारा ज्ञान, खेल–विधि, समन्वय विधि स्वध्याय विधि, प्रयोजन विधि, वार्तालाप विधि आदि विधियों के प्रयोग करने की सलाह शिक्षकों को दी।

शिक्षक के संबंध में भी इनके विपचार काफी उच्च है। शिक्षक की महत्ता तथा उनकी आवश्यकता को दोनों ने ही मुक्त स्वर से स्वीकार किया है। उनका मानना है कि शिक्षा केवल शिक्षक के द्वारा ही दी जा सकती है क्योंकि मानव–मानव से ही सीख सकती। शिक्षण विधियों से कभी नहीं सीख सकता। शिक्षक को चाहिए कि वह बालक को जीवन की गति और मस्तिष्क के बंधन से मुक्ति प्रदान करे। शिक्षक और बालक को सत्य की खोज और समान रूप से सांस्कृतिक परम्पराओं का अनुसरण करना चाहिए। जीवन के सिद्धांतों, मानव आत्मा की पवित्रता और व्यक्तिगत प्रेम में विश्वास शिक्षक को करना चाहिए न कि शिक्षण विधियों में। शिक्षा का कार्य बालक को हतोत्साहित करने वाला

और रचनात्मक शक्ति का दमन करने वाला नहीं होना चाहिए। शिक्षक को क्रिया प्रदान ज्ञान बालकों के समक्ष रखना चाहिए। शिक्षक को चाहिए कि वह बालकों के साथ प्रेम तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करें।

टैगोर तथा गाँधीजी आत्मानुशासन पर जोर देते थे। उनका मानना था कि बच्चे जन्मजात बुरे नहीं होते हैं। उन्हें वातावरण अच्छा या बुरा बनाती है। प्राकृतिक एवं सामाजिक परिवेश को स्वच्द एवं सहयोग पर आधारित कर अनुशासन को बनाये रखा जा सकता है। छात्रों के आचरण पर सर्वाधिक प्रभाव अध्यापक का होता है। अतः शिक्षकों को उच्च कोटि का आचरण करना चाहिए। अनैतिक कार्य भी शारीरिक रोग के समान व्याधि है, इसे दूर करने के लिए शिक्षक की सहानुभूति आवश्यक है। अध्यापकों का उच्च चरित्र और पवित्र आचरण छात्रों को अनुशासन का पाठ पढ़ाने में सर्वाधिक प्रभावशाली हो।

गाँधी एवं टैगोर दोनों ने समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान के लिए अपने विचार व्यक्त किये। टैगोर का मानवतावाद एवं गाँधी का सर्वोदय उनकी इसी विचारात्मक समझ की ऊपज थी। गाँधी के सर्वोदय समाज की प्रकृति आध्यात्मिक है। जिसमें समाज का मार्गदर्शन धर्म द्वारा किया जाता है। टैगोर का मानवतावाद उनके विशेष प्रकार के धर्म की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है। सर्वोदय समाज में सभी व्यक्ति नैतिक तथा अध्यात्मिक मूल्यों से संचालित होते हैं। इसी तरह टैगोर का मानवतावाद विज्ञान के दबाव से उदित पश्चिमी मानवतावाद से अलग धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित है।

इस प्रकार टैगोर एवं गाँधीजी के शिक्षा से संबंधित विचारों के अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि टैगोर एवं

गाँधीजी में समानता होते हुए भी कुछ बातों में भिन्नता भी थी लेकिन शिक्षा के संदर्भ में दोनों के विचार परस्पर मेल खाते हैं। चाहे शिक्षा की अवधारणा का प्रश्न हो या पाठ्यचर्या शिक्षण विधि, शिक्षक या अनुशासन का प्रश्न हो वर्तमान समय में शिक्षा का प्रत्येक पहलू शिक्षाशास्त्रियों के लिए समीचीन प्रतीत होता है।

××××